Yayawari
via bhojpuri

गोधूलि

हेक्टर ह्यू मनरो साकी

अनुवादक
अनुराग रंजन

आवाज
प्रतिमा योगी

गोधूलि (इंग्लैंड)

कहानी

लेखक-हेक्टर ह्यू मनरो 'साकी'

अनुवादक-सुधीर कुमार मिश्र

"ईश्वर बृज" फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2023

नार्मन गार्ट्स्बी पार्क में एगो बेंच पऽ बईठल रहलन। उनका दहिना ओर हल्ला-गुल्ला से भरल हाइड पार्क रहे। मार्च के महीना, गोधूलि के बेरा रहे। सड़क पऽ जादे लोग ना रहे, तबो कव गो लोग अलगा-अलगा मन के इस्तिथी में एने से ओने, एगो बेंच से दुसरका तक घुमत लउकत रहे लो।

गार्ट्स्बी के ई दृश्य बहुते पसन परल, आ ई उनकर मन के ओह बेरा के इस्तिथी से मेल खात रहे। गोधूलि, उनका अनुसार हार के घड़ी रहे। जब हारल आ निराश मरद-मेहरारू अपना लोगन से नजर बचा के इहँवा आ के बइठे ला लो। अइसन घड़ी में ओह लो के हाव- भाव, भेस-भूसा में कवनों तरे के कृत्रिमता ना रहत रहे। उलटा उ सभे उनका आउर से उदासीन रहत रहे लो, काहेकि की अइसन मन के इस्तिथी में केहू ना चाहत रहे कि लोग उनका के चिन्हे। उहाँ बईठल-बईठल गार्ट्स्बीयो अपना के पराजित लोगन में गिने लागल रहे। उनका धन के कवनो कमी ना रहे आ अगर उ चहिते, तऽ अपना के समृद्ध लोगन में गिनवा सकत रहले। बाक़िर उनका तऽ पराजय के अनुभव भईल रहे, आपन कवनों बड़हन उम्मीद के लेके।

बेंच पऽ उनका बगल में एगो बुढ़ आदमी बईठल रहे। ओकर कपड़ा-लाता कुछो निमन ना रहे। फेर उ उठल आ तनि देर में आँखिन से ओझल हो गईल। अब ओकरा जगहि पऽ आके एको नवहा बईठल, जेकर भेस भूषा त निमन रहे, बाकि ओकरो चेहरा पऽ पहिलका बुढ़ आदमी जईसने खिन्नता आ रुष्टता लउकत रहे।